SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-3 July - September 2026 E-ISSN: 2584-2900

कथाकार कुंदन सिंह परिहार के साहित्य में सामाजिक चेतना

श्रीमती रजनी गुप्ता

सहायक प्राध्यापक, (शिक्षाशास्त्र)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

साहित्य का अभिप्राय 'सर्वजन हिताय' होता है अर्थात् जिससे सबका हित हो, उसी को हम साहित्य कहते है। साहित्य एवं समाज परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए है क्योंकि साहित्य के माध्यम से समाज में फैली हुई बुराईयों को दूर करते हैं जिससे एक आदर्श समाज की स्थापना की जाती है। साहित्यकार अपने समय के समाज का साक्षी होता है, वह जो देखता, सुनता और अनुभव करता है, तथा उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। मनुष्य मन की संपूर्ण चेतना को अतिसूक्ष्मता से व्यंजित करने के लिए साहित्य अति उत्तम विधा है।

साहित्य और समाज "एक ही सिक्के के दो पहलू" है, जिसमें एक के बिना दूसरे का कोई मूल्य नहीं होता बल्कि दोनों के बीच एक अन्योन्याश्रित और गहरा संबंध होता है, जिस प्रकार सूर्य की किरणों से जगत में प्रकाश फैला है। उसी प्रकार साहित्य के आलोक से समाज में चेतना का संचार होता है साहित्य समाज के निर्माण में योगदान देता है और समाज के द्वारा ही साहित्य का निर्माण होता है, इसलिए इसे समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य उस समाज को दर्शाता है जिसमें वह लिखा जाता है। यह हमारे आसपास की दुनिया में होने वाली घटनाओं और दृष्टिकोणों को प्रकट करता है। आज हिन्दी साहित्य दिन प्रतिदिन फल-फूल रहा है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान कहानियों का है। कहानियों को हम अपने जीवन का एक भाग मान सकते है क्योंकि इसमें यथार्थवाद अधिक है। संभवत: पाठकों को कहानी विधा अधिक पंसद आती है। कहानियों के लिए प्रसिद्ध कहानीकार एवं उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द ने कहा है- "कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है जितना रातभर गीत सुनने पर भी नहीं हो सकता है।" शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे कहानी सुनना और पढ़ना पंसद

न हो और जिसने कभी कहानी न सुनी हो। हर किसी ने अपने बचपन में अपनी दादी-नानी से कहानी जरूर सुनी होगी और यह सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता ही जा रहा है।

प्रस्तावना

कथाकार कुंदन सिंह परिहार ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्राचीन काल के मानवीय अनुभवों, भावनाओं और ज्ञान को संप्रेषित किया है, उनके कथा साहित्य पर प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे - वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य और आख्यानों का यथार्थ चित्रण है, आधुनिक हिंदी का विकास 20वीं सदी में हुआ है, जिसमें कहानियों के माध्यम से सामाजिक सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों के चित्रण को प्रमुखता दी गई है तथा उनकी रचनाओं में समाज के अंतर्विरोधों विसंगतियों और मानवीय संवेदनाओं का भी चित्रण किया गया है। परिहार जी की कथाओं में केवल घटनाओं का विवरण ही नहीं मिलता बल्कि उनमें सामाजिक यथार्थ के प्रति गहरी संवेदनशीलता और परिवर्तनशील चेतना भी दिखाई देती है। परिहार जी ने अपने साहित्य में सामाजिक शोषण आर्थिक असमानता स्त्री स्थिति जातीय भेदभाव तथा बदलते सामाजिक मूल्यों जैसे मुद्दों को अपने कथाविन्यास का मूल आधार बनाते हैं।

शब्द संकेत

समाज संवेदनशील, सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक संवेदनाएं, ग्रामीण, परिवेश, शोषित, वंचित, समाज, सामाजिक विसंगतियाँ, आदि।

शोध विस्तार

कथाकार कुंदन सिंह परिहार को कहानी लेखन एवं व्यंग्य लेखक के रूप में जाने जाते हैं उन्होंने समाज की इस चेतना को केवल विचार या संदेश के स्तर पर न रखकर उसे जीवन के ठोस अनुभवों, संघर्षों और व्यावहारिक स्थितियों से जोड़ा है। इसके पहले हम चेतना शब्द के अर्थ को जान लें।

चेतना का अर्थ

'चेतना' शब्द संस्कृत के 'चित्' धातु से बना है, जिसका आशय है जानना, महसूस करना या अनुभव करना, चेतना का सामान्य अर्थ है किसी जीव या व्यक्ति की जागरूकता या सजगता की अवस्था। यह वह शक्ति है जो हमें सोचने, समझने, अनुभव करने और निर्णय लेने में समर्थ बनाती है। दूसरे शब्दों में, चेतना वह स्थिति है जिसमें कोई जीव अपने बाह्य व आंतरिक वातावरण को समझ सकता है और उसके अनुसार प्रतिक्रिया दे सकता है। हिन्दी विश्वकोश के अनुसार "चेतना मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे व्यक्तिगत विषय में तथा अपने वातावरण के विषय में ज्ञान कराती है। इसी ज्ञान को विचार शक्ति या बुद्धि कहा जाता है।" सामाजिक चेतना से हमारा तात्पर्य समाज के प्रति चिन्तन, जागरूकता, संवेदनशीलता, ज्ञान आदि है। सामाजिक चेतना से आशय है समाज की संरचना, उसकी आवश्यकताओं, समस्याओं और संभावनाओं के प्रति सजग हो। जैसे- गरीबी, अशिक्षा, लैंगिक असमानता, जातिवाद आदि को समझना तथा यह चेतना व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित होने से रोकती है और उसे यह सोचने की प्रेरणा देती है कि उसके कार्यों से समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा। नैतिक और मानवीय मूल्यों की समझ: व्यक्ति में सहानुभूति, सहिष्णुता, सहयोग, और भाईचारे जैसे गुण विकसित होते हैं। सामाजिक चेतना के निर्माण में शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता, आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक चेतना एक सजीव समाज की पहचान है। जब समाज के सदस्य केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी सोचने लगते हैं, तभी एक स्वस्थ, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील समाज की स्थापना संभव होती है।

जिस समाज में मनुष्य अपनी सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं होते. वह समाज प्रगति नहीं कर पायेगा। सामाजिक समस्या का अभिप्राय वह आपत्तिजनक परिस्थिति अथवा परम्परा है, जिसे अधिकांश सामाजिक व्यक्ति निराकरण योग्य मानते हैं। इस चेतना के अभाव में समाज का सृजन और पोषण सम्भव नहीं है, क्योंकि इसके अभाव में मनुष्य जाति पशुओं के समूह मात्र हैं। सामाजिक जीवन के प्रति जो चेतना है, वह सामाजिक चेतना का ही एक स्तर हैं यह व्यक्तिमूलक और समाजमूलक दोनों रूपों में रहती है। व्यक्ति चेतना सामाजिक चेतना का एक रूप है। डॉ. सोमनाथ शुक्ल के अनुसार "सामाजिक चेतना से व्यक्ति का समाज

के प्रति दायित्व और व्यक्ति के सम्बन्धों के स्वरूप को निर्धारित और नियंत्रित किया है। सामाजिक चेतना की सार्थकता प्रत्येक मानवीय समस्या पर सामूहिक दृष्टि से विचार करना है। सामाजिक चेतना ने आधुनिक युग मे अधिकाधिक विस्तार प्राप्त किया है। व्यक्ति, उसका मन और महत्त्वाकांक्षा, परिवार और परिवेश, समाज संरचना और स्वरूप, सामाजिक न्याय - अन्याय, सामाजिक नीति और अनीति, धर्म और आध्यात्म, राज्य और राजनीति, शान्ति और समर आदि सभी सामाजिक चेतना के अन्तर्गत विचार योग्य है।" हिन्दी विश्वकोश के अनुसार "चेतना मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे व्यक्तिगत विषय में तथा अपने वातावरण के विषय में ज्ञान कराती है। इसी ज्ञान को विचार शक्ति या बुद्धि कहा जाता है।"

जीवन परिचय

कुंदन सिंह परिहार हिंदी साहित्य के एक प्रतिष्ठित कथाकार और व्यंग्यकार हैं, जिनका लेखन समाज की गहराइयों में पैठ बनाकर मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक विसंगतियों को उजागर करता है। परिहार जी का जन्म 25 अप्रैल 1939 को छतरपुर जिले के अलीपुरा नामक स्थान में हुआ है। वे मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के विभिन्न कॉलेजों में 40 वर्षों से अधिक समय तक अध्यापन कार्य किया, और 2001 में जबलपुर के जी. एस. कॉलेज के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए 1960 से निरंतर लेखन कर रहे डॉ. परिहार ने अब तक 200 से अधिक कहानियाँ और इतने ही व्यंग्य रचनाएँ लिखी हैं, जो देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में तीसरा बेटा, हासिल, वह दुनिया, शहर में आदमी और कांटा शामिल हैं। उनकी रचनाओं में पात्रों की मनोदशा की गहरी समझ और सामाजिक विसंगतियों पर तीखी टिप्पणी देखने को मिलती है। वे सरल भाषा में गूढ़ विषयों को प्रस्तुत करने में निपुण हैं और उनकी लेखनी में वामपंथी दृष्टिकोण की झलक भी मिलती है।

कहानी संग्रह :

कांटा (2018), जादू-टोना (2022), तीसरा बेटा (1982), वह दुनिया (1993), हासिल (1988), शहर में आदमी (2024), खोया हुआ कस्बा और अन्य कहानियाँ (2023)।

व्यंग्य संग्रह :

एक रोमांटिक की त्रासदी (2018), बेखुदी के लमहें (2018), नवाब साहब का पड़ोस (2019), मर्ज़ लाइलाज (2021), महाकवि 'उन्मत्त' की शिष्या (2022), 1994 में वागीश्वरी सम्मान और 2004 में राजस्थान पत्रिका के सृजनात्मकता पुरस्कार से सम्मानित।

कथाकार कुंदन सिंह परिहार के कथा-साहित्य (कहानियों और व्यंग्य) में समाज का यथार्थ स्वरूप चेतना गहरे रूप में अंतर्निहित है। उनकी रचनाओं में व्यक्ति और समाज के व्यवस्था की विसंगतियाँ, पारिवारिक तथा सामाजिक विडंबनाएँ, और आम आदमी की पीड़ा-आकांक्षाएँ उभरकर सामने आती हैं। आपकी महत्वपूर्ण कृतियां निम्न हैं

कांटा - इस कहानी में समाज की छोटी-छोटी समस्याओं, अंधविश्वास और मानसिक उलझनों को उजागर किया गया है। यहाँ एक प्रतीकात्मक दृष्टिकोण मिलता है कि कैसे जीवन की राह में 'कांटे' यानी अवरोध और अन्याय हर समय मौजूद रहते हैं। लेखक सामाजिक चेतना को इस रूप में उभारते हैं कि मनुष्य को इन अवरोधों से जूझकर आगे बढ़ना होगा।

जादू टोना - ग्रामीण और पिछड़े समाज में प्रचलित रूढ़ियों पर करारा व्यंग्य किया है। इस कहानी के माध्यम से यह पता चलता है कि पाखंडी लोग भोले-भाले समाज को भ्रमित करके अपना स्वार्थ साधते हैं। यहाँ सामाजिक चेतना अंधविश्वास के विरोध और जागरूकता की आवश्यकता के रूप में सामने आती है।

वह दुनिया - यह कहानी यथार्थ और आदर्श के बीच के संघर्ष को उभारती है। यहाँ परिहार समाज की कठोर सच्चाईयों–गरीबी, भेदभाव और असमानता–को उजागर करते हैं एवं इस रूप में प्रकट होती है कि मनुष्य को एक बेहतर और न्यायपूर्ण 'दुनिया' बनाने की आकांक्षा रखनी चाहिए।

तीसरा बेटा - पारिवारिक और सामाजिक संरचना के भीतर बेटे-बेटियों के बीच के भेदभाव और परंपरागत सोच को उजागर करने वाली कहानी है। यहाँ लेखक ने दिखाया है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था कैसे परिवार और समाज दोनों को विकृत करती है। सामाजिक चेतना लैंगिक समानता और मानवीय संवेदना के रूप में प्रकट होती है।

व्यंग्य-लेखन में सामाजिक चेतना

मर्ज लॉ इलाज- यह व्यंग्य सामाजिक और राजनीतिक बीमारियों का रूपक है। यहाँ लेखक व्यवस्था की भ्रष्टाचारपूर्ण प्रवृत्तियों, नैतिक पतन और जनता की लापरवाही पर कटाक्ष करते हैं। सामाजिक चेतना यहाँ उपचार की खोज में छिपी है–अर्थात समाज को अपनी बीमारियों का इलाज स्वयं करना होगा। महाकवि उन्मत्त की शिष्या - इस व्यंग्य में साहित्यिक समाज की बनावटी आडंबरपूर्ण दुनिया पर करारा प्रहार है। लेखक यहाँ दिखाते हैं कि किस प्रकार रचनात्मकता के नाम पर दिखावा, प्रशंसा और शिष्यत्व की प्रवृत्ति हावी होती हुई नजर आती है। इस चेतना में सच्ची साहित्यिक साधना और ईमानदारी ही रचनाकार का मूल्य तय करें, न कि चाटुकारिता।

बेख़ुदी के लम्हे- इस व्यंग्य में आधुनिक जीवन की विसंगतियों, भागदौड़, स्वार्थ और खोखली दिखावटी संस्कृति का चित्रण है। लेखक सामाजिक चेतना को इस रूप में उभारते हैं कि वास्तविक एवं मानवीय रिश्तों की अहमियत समझी जाए, न कि केवल दिखावे और उपभोग की अंधी दौड़ में फंसा रहा जाए। उन्होंने समाज के उस वर्ग को अपनी कहानियों और व्यंग्यों में प्रस्तुत किया, जो शोषण, अन्याय और असमानता का शिकार है। उनका मानना है कि सामाजिक चेतना का अर्थ है - यथार्थ को आँख मूँदकर स्वीकार न करना बल्कि उसे पहचानना और उसकी आलोचना करना। तथा ग्रामीण भारत की जमीनी सच्चाइयों को बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा है। ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ, किसान की बेबसी, सामंती सोच, जातिवादी ढाँचे आदि को खूबसूरत ढंग से चित्रित किया गया है।

मानवीय संवेदना और पीड़ा की अभिव्यक्ति

सामाजिक चेतना उनके लिए केवल राजनीतिक या आर्थिक पक्ष नहीं था, बल्कि मनुष्य की पीड़ा, असमानता, संघर्ष और टूटन को भी महसूस करना था। उनकी कहानियाँ आम आदमी के दुःख-सुख, उसकी हताशा और उसकी आकांक्षाओं को सामने लाती हैं। उनकी कहानियाँ शोषण, और वर्ग संघर्ष को चित्रित करती हैं। वे यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि कैसे गरीब और निम्न

वर्गों को सत्ताधारी वर्गों द्वारा शोषित किया जाता है, और कैसे ये वर्ग अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं।

परिहार जी ने सामाजिक चेतना को पुराने मूल्यों और नए परिवर्तनों के बीच टकराव में भी देखा है। उनका मानना है कि समाज तभी आगे बढ़ेगा जब वह अंधानुकरण और रूढ़िवाद से बाहर आकर तार्किक और मानवीय मूल्यों को अपनाएगा। वे यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि किस प्रकार समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है और इसके क्या दुष्परिणाम सामने आते हैं। उनके पात्र अक्सर इस गिरावट के खिलाफ संघर्ष करते दिखते हैं। कुंदन सिंह परिहार का लेखन मानवीय संवेदना से भरपूर है। उनके व्यंग्य-लेखन में सामाजिक चेतना बड़ी स्पष्टता से दिखाई देती है। उन्होंने राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक पाखंड और नैतिक पतन पर तीखा प्रहार किया और पाठक को सोचने के लिए मजबूर किया।

कुंदन सिंह परिहार ने जो विचार अपनी कहानियों में स्पष्ट किए हैं उनकी कहानियाँ मनोवैज्ञानिक संवेदनाएँ और मानवीय संवेदनशीलता से परिपूर्ण होती हैं। वे मध्यवर्गीय जीवन, ग्रामीण परिवेश, शोषित-वंचित समाज कि विसंगतियों को अपनी कहानियों के केंद्र में रखते हैं। परिहार जी 86 साल में भी वे निरंतर सक्रिय हैं और अभी-अभी उनका एक व्यंग्य संग्रह "नवाब साहब का पड़ोस" प्रकाशित हुआ है। वे 1960 से आज तक लगातार कहानी और व्यंग्य लिखने में अपनी कलम चला रहे है। सात कथा संग्रह एवं छः व्यंग्य संकलन के प्रकाशित होने के बाद भी हर माह व्यंग्य संगोष्ठी में वे नया व्यंग्य लिखकर पढ़ते हैं। वे सिद्धांतवादी है स्वाभिमानी हैं, किन्तु, अभिमानी कदापि नहीं। उनकी अपनी अलग तरह की धाक है। चेलावाद और गुटबंदी से वे चिढ़ते हैं। यही कारण है कि उनकी कलम एक अलग साफ रास्ता बनाकर चलती रही है। साहित्यिक कार्यक्रमों में अपनी वजनदार बात से कभी श्रोताओं को चौंकाते रहे तो कभी अपनी सहज, सरल भाषा में लिखे व्यंग्यों से चिकोटी काटते रहे। उनकी कहानियों में भी व्यंग्य की एक अलग तरह की धारा बहती मिलती है।

हरिशंकर परसाई जी ने परिहार जी की रचनाओं को पढ़कर लिखा है परिहार के पास तीखी नज़र और प्रगतिशील दृष्टिकोण है, वे राजनीति समाजसेवा, शिक्षा संस्कृति, प्रशासन आदि के क्षेत्रों की विसंगतियों को कुशलता से पकड़ लेते हैं।

आगे परिहार जी कहते हैं कि 'मेरे पात्र बड़े प्यारे हैं, कमजोर, निश्छल और भोले-भाले हैं, ईमानदार और आसानी से ठगे जाने वाले लोग हैं। वे बिना कोई हलचल मचाए दुनियां में आते हैं और बेनाम, खामोशी से हो जाते हैं।

परिहार जी अगली पीढ़ी के लिए चिंतित हैं क्योंकि अगली पीढ़ी के सामने हर तरह के संकट ही संकट प्रकट हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में वे कहते हैं कि- "ऐसे विकट माहौल में प्रार्थना की जा सकती है कि हमारा प्रजातन्त्र सच्चा प्रजातंत्र बने और हमारे जन प्रतिनिधि सच्चे बनकर प्रजा की समस्याओं के समाधान में संलग्न हों।"

परिहार जी ने अपने साहित्य में ग्रामीण जीवन की वास्तविक तस्वीर श्रमिक व किसान वर्ग की पीड़ा सामाजिक असमानता नैतिक पतन मानवीय संबंधों की जटिलता स्त्री जीवन का दु:ख दमन और शोषण के खिलाफ संघर्ष समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार किया है। इनकी कहानियों में उपयोगिता की दृष्टि से देखा जाये तो हम यहीं कह सकते हैं कि इनकी कहानियों में मानवीय पीड़ा और संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है तथा यथार्थवाद और सामाजिक प्रतिबद्धता का नया दृष्टिकोण मिलता है। उनकी सामाजिक चेतना केवल आलोचना नहीं है बल्कि मनुष्य और मनुष्य के बीच संबंधों की करूणा और संवेदना भी है। उनकी कहानियों में बदलते समाज की चिंताएँ -बेरोजगारी नगरीयकरण मूल्य संकट आदि दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ आधुनिक समाज में बढ़ती स्पर्धा आर्थिक असमानता और मानव मूल्यों के क्षरण को भी रेखांकित करती है। इनके साहित्य की भाषा सहज सटीक और संवाद परक है, जिससे समाज में यथार्थवादी रूप दिखाई देता है साहित्य का कथानक भी लोगों के सामान्य जीवन पर आधारित है।

निष्कर्ष

कुंदन सिंह परिहार हिंदी के प्रमुख कहानीकारों और व्यंग्यकारों में गिने जाते हैं, जिनके लेखन में यथार्थ, मानवीय संवेदनाएं और तीक्ष्ण व्यंग्य की स्पष्ट झलक मिलती है। उनकी कहानियों कांटा, दुनिया, जादू टोना, हासिल आदि में आम जनजीवन की समस्याएं और सामाजिक विडंबनाएं अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। अंतरात्मा का उपद्रव, बेख़ुदी के लम्हें,

मर्ज लॉ इलाज है, जैसे-व्यंग्य संग्रहों में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, पाखंडों एवं मानवीय स्वार्थ पर करारा प्रहार किया है। परिहार का लेखन न केवल मनोरंजक है, बल्कि यह हम सभी लोगों के लिए उपयोगी भी है।

सन्दर्भ सूची

1. परिहार, कुंदन सिंह (2018): एक रोमांटिक की त्रासदी, व्यंग्य संकलन उदय पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली। परिहार[6] कुंदन सिंह (2019): नवाब साहब का पडोस, व्यंग संकलन वर्जिन पीठ।
2. परिहार, कुंदन सिंह (2018): बेखुदी के लम्हें, वर्जिन पीठ।
3. परिहार, कुंदन सिंह (2022) : महाकवि उन्मत्त की शिष्या, वर्जिन साहित्य पीठ, नई दिल्ली।
4. परिहार, कुंदन सिंह (2024): मर्ज़ लॉ इलाज, वर्जिन साहित्य पीठ, व्यंग संकलन नई दिल्ली।
5. परिहार, कुंदन सिंह (2022): जादू-टोना, और अन्य कहानियाँ, वर्जिन साहित्य पीठ, नई दिल्ली
6. मुंशी, प्रेमचंद्र (1936) : मानसरोवर, राज्यपाल एण्ड संस, नई दिल्ली।
7. मुंशी, प्रेमचंद्र (2005): पंच परमेश्वर, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली। मुंशी प्रेमचंद्र (2010): कफन, लोक भारतीय प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. मुंशी, प्रेमचंद्र (2012): प्रेमचंद्र की श्रेष्ठ कहानियाँ, संपादक राम विलास शर्मा, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
9. मुंशी, प्रेमचंद (1916): पंच परमेश्वर और अन्य कहानियाँ, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली
10. मुंशी, प्रेमचंद (1936) : कफन और अन्य कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. शुक्ल, डॉक्टर सोमनाथ - बीसवीं सदी की सामाजिक चेतना, पंचशील प्रकाशन, जयपुर संस्करण- 1992।

12. प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य, एस• के• प्रकाशन, संस्करण- 1999।

13. यादव, जयसिंह - "रवींद्र कालिया के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन" पी-एच.डी. 2022।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार